करवा चौथ कथा | By Varsha Srivastav |

सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
सभी सुहागन महिलाएं,
उनके गुण हम गाते हैं,
हम कथा सुनाते हैं।

भक्ति और प्रेम पति के लिए बताते हैं,
पति के लिए बताते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

एक कथा में करवा की है,
गुत्थी अनेक कथा।
प्रचलित सदियों से संसार में,
है पावन ये प्रथा।
जो अपना सौभाग्य अखंड
बनाती है व्रत से,
श्रद्धा रखे स्नेह ईश्वर में,
डिगती नहीं पथ से।
पूजा करती स्तान ध्यान कर,
प्रथम गणपति की,
पर उनसे फिर मांगती
दीर्घायु अपने पति की।
शिव, पार्वती और चंद्रदेव के
साथ में करे पूजा,
नहीं चाहती वे सुहाग के
बिन कुछ और दूजा।
गेरू चावल से मंदिर में
करवा सजाते हैं,
मंदिर में करवा सजाते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

एक कथा प्रचलित है
करवा नाम स्त्री की,
मिलती-जुलती परिस्थिति
जिससे सावित्री की।
स्नान हेतु गई कुंडभद्रा में

करवा पति के संग,
किन्तु विधाता ने डाला था
तभी रंग में भंग।
मगरमच्छ ने पैर पति का
पकड़ लिया तत्पर,
करवा ने कच्चे धागे से
बांध लिया था मगर।
हिल-डुल मगर नहीं पाया,
और पति भी न छोड़ा,
करवा ने यमराज का इस
घटना पे ध्यान मोड़ा।
आगे फिर क्या हुआ
सभी वृत्तांत सुनाते हैं,
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

सुनकर करवा की पुकार
यमराज धरा पर आए,
बोली करवा पति को तुम
इस दुष्ट से दियो छुड़ाए।
भेज इसे यमलोक मेरे,
पति को दो जीवदान,
बोले यम तेरे पति की
मैं ले आया हूँ प्राण।
मगर मगर के जबड़े में है
अभी जीवन शेष,
इसको मगर के जबड़े में ही
होना होगा भस्म।
बोली करवा, हुआ जो ऐसा
दूंगी तुमको श्राप,
सती के कोप से नहीं बचोगे,
कर लो तप या जाप।
बोले यम भयभीत होकर,
तुम्हें शीश नवाते हैं,
तुम्हें शीश नवाते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

जैसे करवा ने रक्षा की
अपने सुहाग की,
अन्य कथा है करवा माई
के अनुराग की।

एक सेठ की पुत्री नाम था
वीरवती उसका,
करवा का व्रत रखा न
फिर भी बचा पति उसका।
बिना चंद्र दर्शन के ही
था भोजन उसने किया,
इसलिए पति बिन अपराध ही
दंडित हो गया।
पछतावा कर अनुष्ठान
करती है वीरवती,
इस प्रताप से फिर से
जीवित हो जाता है पति।
करवा चौथा के व्रत की
शक्ति तुम्हें बताते हैं,
आओ तुम्हें बताते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

एक कथा और बड़ी प्रसिद्ध है
करवा के व्रत की,
सात भाइयों की एक प्यारी
बहना के तप की।
प्राण निछावर करते सातों
भाई बहना पर,
ऐसा प्रेम कहाँ मिल पाता
आज है वसुंधरा पर।
ब्याह हुआ और विदा हुई
बहना तो रोए भाई,
लौट के मायके करवा
चौथ पे बहना मिलने आई।
भोजन करने बैठे भाई
बोले बहना से,
तुम भी साथ में भोजन
कर लो अपने भैया के।
बिन पूजा के चाँद की
आज हम कुछ नहीं खाते हैं,
आज हम कुछ नहीं खाते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

मेघ के पीछे चाँद छुपा था,
दुर्लभ दर्शन था,

भूख प्यास से बहना का भी
व्याकुल तन मन था।
छोटे भाई को एक युक्ति
सूझी वहाँ चुपचाप,
ओंट में पीपल की दीपक धर
कहता है यह बात —
बहन आज घनेरे बादल
घेर के बैठे चाँद,
फिर भी झलक मिल रही है
जो चुप से देखे चाँद।
बहन खुशी से चाँद समझ
दीपक की पूजा कर,
भोजन करने बैठी चाँद को
बिना अर्घ्य देकर।
अनजाने भी कभी-कभी
अपराध हो जाते हैं,
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

पहले कौर में छींक आई,
और दूजे में बाल,
तीसरे कौर में दुखद सन्देशा
भिजवाता ससुराल।
असमय पति के मृत्यु का
वह समाचार पाती,
सुधबुध खोकर बड़ी जोर से
वह है चिल्लाती।
तब भाभी बतलाती है
जो भी सच्चाई थी,
व्रत टूटा था इसीलिए
यह नियति आई थी।
तब वह स्त्री ये प्रण लेती है,
देवों को ललकार,
जीवन फिर मिलने तक
पति का करेगी न संस्कार।
देव भी कठिन प्रतिज्ञा से
उसके घबराते हैं,
प्रतिज्ञा से घबराते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

एक वर्ष तक पति के शव के

पास थी वो बैठी,
तिनका-तिनका घास भी
एकत्र करती जाती।
अगले वर्ष जब करवा आया,
तो वह व्रत रखती,
“यम सुई ले लो, प्रिय सुई दे दो”
यह सबसे कहती।
एक स्त्री वह घास का तिनका
जब ले लेती है,
यम से पति के प्राण भी
वह वापस ले लेती है।
निश्चय दृढ़ रखके जो भी
स्त्री धर्म निभाती है,
उसका सुख सौभाग्य बचाने
लक्ष्मी आती है।
स्वर्ग में डंका उसके नाम का
देव बजाते हैं,
डंका देव बजाते हैं।
सौभाग्य का व्रत है करवा,
जिसकी कथा सुनाते हैं,
जिसकी कथा सुनाते हैं।

जय जय करवा माई,
तु सुख सुहाग लाई।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%b0%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%9a%e0%a5%8c%e0%a4%a5-%e0%a4%95%e0%a4%a5%e0%a4%be-by-varsha-srivastav/